०२. सत्य जगतिदु पंच भेदवु...

सत्य जगतिदु पंच भेदवु, नित्य श्री गोविंदन
कृत्यवरितु तारतम्यदि कृष्णनधिकनॆंदु सारिरै ------------------१

जीव-ईशगॆ भेद सर्वत्र जीव-जीवकॆ भेदवु,
जीव-जडकॆ, जड-जडकॆ भेद जीव-जड परमात्मगॆ ------------२

मानुषोत्तमरधिप क्षितिपरु, मनुष्य देव गंधर्वरु
जान पित्राजान कर्मज दानवारि सत्वात्मरु ------------------३

गणप मित्ररु सप्त ऋषिगळु वह्नि नारद वरुणरु,
इनजगॆ सम सूर्यचंद्ररु मनसुतॆयु हॆच्चु प्रवहनु ----४

दक्षसम अनिरुद्ध शचिगुरु रतिस्वयंभुवरार्वरु,
प्राणकिंत अधिक कामनु, किंचिदधिकनु इंद्रनु --------------५

देव इंद्रनिगधिक महारुद्र देवसम शेष गरुडरु,
केवल रुद्रादिगळिगॆ देवि भारति सरस्वति --------------------६

वायुविगॆ समरिल्ल जगदॊळु वायु देवरॆ ब्रह्मरु,
वायु ब्रह्मगॆ कोटि गुणदिंद अधिक शक्तळु श्री रमा -----७

अनंत गुणगळिंद लकुमिगधिक पुरंदर विठलनु,
घन समरु इवगिल्ल जगदॊळु हनुमह्रत्पद्मवासिगॆ ----------८